विस्तृत प्रतिवेदन

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

एवं

गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास’

02 अक्टूबर 2024

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, October, 2024

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronic or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet

निदेशक की कलम से...

मानव सभ्यता के इतिहास में शिक्षा सदैव सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक उन्नयन और नैतिक उत्थान का सशक्त माध्यम रही है। जब हम आज की वैश्विक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करते हैं जहाँ पर्यावरणीय संकट, सामाजिक विषमता, हिंसा, मूल्यहीनता एवं नैतिक विचलन जैसी चुनौतियाँ बढ़ रही हैं तो यह अनुभव होता है कि महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार इन समस्याओं के समाधान के रूप में अत्यंत प्रासंगिक रहे हैं।

गांधीजी ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन न मानकर, व्यक्ति के अंतःकरण को संस्कारित करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा। उनकी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर, सत्यनिष्ठ, करुणायुक्त एवं समर्पित नागरिक का निर्माण करना था, जो न केवल अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी हो अपितु समस्त मानवता के कल्याण की भावना से प्रेरित हो।

"महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास" विषयक यह राष्ट्रीय संगोष्ठी इसी विचार को केंद्र में रखकर एक सशक्त विमर्श का मंच प्रदान करती है। यह आयोजन दो महनीय संस्थानों गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद जिसकी स्थापना स्वयं गांधीजी ने की थी तथा अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी के साझा प्रयास का परिणाम है जो निश्चित रूप से शिक्षा के मानवीय, नैतिक और सांस्कृतिक पक्ष को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक पहल है।

मैं इस संगोष्ठी से जुड़े सभी प्रतिभागियों, विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों तथा आयोजकों को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ। मेरी आशा है कि यह संवाद केवल विचारों तक सीमित न रहकर, व्यावहारिक स्तर पर शिक्षा व्यवस्था में गांधीवादी मूल्यों की पुनः स्थापना की प्रेरणा बनेगा।

इस प्रयास से शिक्षा की वह दृष्टि पुनः सशक्त हो, जो व्यक्ति को मात्र ज्ञानवान नहीं, अपितु मानवतावादी, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिक बनाये, यही इस संगोष्ठी की वास्तविक सफलता होगी।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक
अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

शुभकामना संदेश

गूजरात विद्यापीठ की स्थापना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा 18 अक्टूबर 1920 को इस महान उद्देश्य के साथ की गई थी कि शिक्षा पाश्चात्य प्रभावों से केवल मुक्त ही न हो बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, ग्राम्य जीवन, आत्मनिर्भरता और श्रम की प्रतिष्ठा पर भी आधारित हो। यह संस्थान प्रारंभ से ही उस वैकल्पिक शिक्षा दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने का प्रयास करता रहा है, जिसमें शिक्षा का केंद्र बिंदु मनुष्य का समग्र विकास हो- केवल जानकारी नहीं, अपितु ज्ञान के साथ संस्कार और संवेदना भी।

आज जब विश्व सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संकटों के दौर से गुजर रहा है, तब महात्मा गांधी की शैक्षिक दृष्टि एक पथप्रदर्शक दीपशिखा के समान हमारे समक्ष है। गांधीजी का यह विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्तित्व निर्माण करना है जो सत्य, अहिंसा, शांति, सह-अस्तित्व और परस्पर सहयोग जैसे मूल्यों को आत्मसात कर सके। उनका शिक्षा दर्शन स्वावलंबन, कर्तव्यनिष्ठा, समाजोपयोगिता और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना को केंद्र में रखता है।

"महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास" विषयक यह राष्ट्रीय संगोष्ठी समय की मांग और नैतिक आवश्यकता दोनों का प्रतीक है। अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी एवं गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में यह संगोष्ठी एक ऐसी बौद्धिक एवं नैतिक पहल है, जो समसामयिक शिक्षा विमर्श को न केवल समृद्ध करेगी, बल्कि शिक्षकों, शोधार्थियों एवं नीति-निर्माताओं को गांधीवादी दृष्टिकोण से प्रेरित भी करेगी।

मैं इस संगोष्ठी के आयोजकों, प्रतिभागियों, विद्वानों और सभी सहभागियों को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं साधुवाद देता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि यह विमर्श महात्मा गांधी के विचारों को न केवल स्मरणीय बनाए, अपितु उन्हें वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में पुनः जीवन्त एवं क्रियाशील बनाए।

गांधीजी का यह कथन हम सभी के लिए पाथेय बन सकता है: "सच्ची शिक्षा वही है जो हमें जीवन के लिए तैयार करे, और आत्मा का विकास करे।"
आइए, हम इस संदेश को जीवन और शिक्षा में आत्मसात करें।

डॉ. हर्षद पटेल
कुलपति
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात

शुभकामना संदेश

महात्मा गांधी एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र, वाराणसी एवं गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास' भारत की समकालीन शिक्षा-चुनौतियों एवं भावी दिशा के पुनर्विचार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई।

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्रों, विमर्शों एवं अंतर्विषयी चर्चाओं ने यह रेखांकित किया कि भारतीय शिक्षा-व्यवस्था को एनईपी 2020 की मूल भावना - अनुभवपरक अधिगम, दक्षता-आधारित मूल्यांकन, प्रौद्योगिकी-सम्मिलन, स्थानीयता और वैश्विकता के संतुलन, तथा बहु-अनुशासनिक शिक्षा के अनुरूप पुनर्गठित करना समय की आवश्यकता है। विशेषतः शिक्षक-क्षमता निर्माण पर दिया गया बल यह दर्शाता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है जब शिक्षक नवाचारपूर्ण, शोधोन्मुख और विद्यार्थी-केन्द्रित दृष्टिकोण से सक्षम बनाए जाएँ।

संगोष्ठी का एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि पाठ्यचर्या-सुधार को कौशल, नैतिक चेतना, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा वास्तविक जीवन-आधारित अधिगम से समृद्ध किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षार्थी केवल ज्ञानवान ही न रहे अपितु समाज एवं उद्योग दोनों के लिए सक्षम योगदानकर्ता बन सकें। यह दृष्टिकोण भारत के विजन 2047 के अनुरूप एक सशक्त, शोध-उन्मुख और वैश्विक प्रतिस्पर्धा हेतु सक्षम शिक्षा-पद्धति के निर्माण में निर्णायक सिद्ध होगा।

गांधीवादी शिक्षा-चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में स्वशासन, सहजीवन, सत्य-अहिंसा, उपयोगी श्रम तथा सतत् विकास की अवधारणाएँ आज के उच्च शिक्षण में असाधारण प्रासंगिकता रखती हैं। विद्यार्थियों में इन मूल्यों का समावेश उन्हें केवल शैक्षणिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक एवं व्यावसायिक रूप से भी समृद्ध करता है। अतः यह आवश्यक है कि हम गांधीवादी शैक्षिक आदर्शों को व्यावहरिक नीतियों, शिक्षण-विधियों और संस्थागत ढाँचों में सुव्यवस्थित रूप से रूपान्तरित करें।

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.) ऐसे आयोजन द्वारा न केवल अकादमिक विमर्श को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय शिक्षा के भावी स्वरूप को दिशा देने में भी सार्थक योगदान देता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन शैक्षणिक अंतर्दृष्टियों को दीर्घकालिक, ठोस एवं क्रियात्मक नीतियों में परिवर्तित किया जाए, जिससे भारतीय शिक्षा-तंत्र में और संरचनात्मक सुधार संभव हो सके।

मैं इस संगोष्ठी से जुड़े सभी विद्वानों, विशेषज्ञों, प्रतिभागियों तथा आयोजन टीम के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ, जिनके विद्वत्तापूर्ण योगदान और समर्पण ने इस महत्वपूर्ण आयोजन को शैक्षणिक उत्कृष्टता का एक सफल मंच प्रदान किया।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध
अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी

शुभकामना संदेश

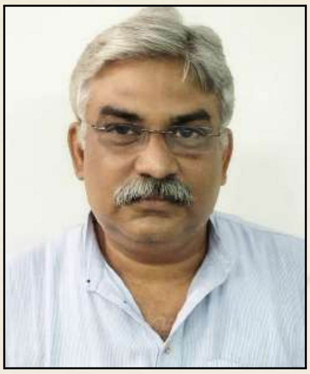

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र, वाराणसी एवं गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात द्वारा महात्मा गांधी एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास" भारत में शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास रहा। संगोष्ठी में हुई चर्चाओं ने शिक्षा को एनईपी 2020 के मूल सिद्धांतों के अनुरूप बनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया, जिसमें अनुभवात्मक अधिगम, दक्षता-आधारित शिक्षा, डिजिटल एकीकरण और बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण शामिल हैं। इस आयोजन ने शिक्षकों की क्षमता निर्माण की अनिवार्यता को भी उजागर किया, ताकि वे उन्नत शिक्षण विधियों से अवगत हो सकें, जो छात्रों में जिज्ञासा, सहभागिता और प्रौद्योगिकी-संचालित शिक्षण को प्रोत्साहित करें।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में पाठ्यक्रम सुधारों की आवश्यकता पर भी बल दिया गया, जिसमें कौशल-आधारित अधिगम को एकीकृत किया जाए, जिससे स्नातक केवल शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट ही नहीं, बल्कि उद्योग के लिए भी तैयार हों। इन अंतर्दृष्टियों से सीख-केंद्रित, लचीली और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी शैक्षिक प्रणाली के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा, जो भारत के विज़न 2047 के अनुरूप होगी।

गांधीवादी शिक्षा दर्शन के संदर्भ में आधुनिक उच्च शिक्षा में स्वशासन की प्रासंगिकता, 21वीं सदी में सतत विकास की महात्मा गांधी की दृष्टि तथा महात्मा गांधी के सिद्धांतों के माध्यम से करियर विकास की दिशा जैसी अवधारणाएँ आज के शिक्षा तंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनके विचारों को व्यवहार में लाना और शिक्षा प्रणाली को इस दिशा में विकसित करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी न केवल अकादमिक रूप से बल्कि सामाजिक और व्यावसायिक रूप से भी सक्षम बन सकें।

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.) इस महत्वपूर्ण पहल के आयोजन के लिए सराहना का पात्र है, जिसने भारत में शिक्षा की पुनर्कल्पना के लिए मार्ग प्रशस्त किया। अब आगे बढ़ते हुए, यह अत्यंत आवश्यक है कि हम इन रणनीतियों को ठोस, सतत और व्यावहारिक नीतियों में परिवर्तित करें, ताकि शिक्षा को राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के अनुरूप बनाया जा सके।

मैं सभी प्रतिभागियों, विशेषज्ञों और आयोजकों के प्रति अपनी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करता हूँ, जिनकी अटूट समर्पण भावना और बहुमूल्य योगदान ने इस संगोष्ठी को एक उल्लेखनीय सफलता दिलाई है।

प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा
गांधी अध्ययन विभाग
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

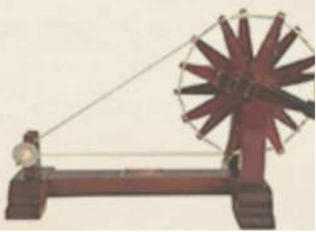

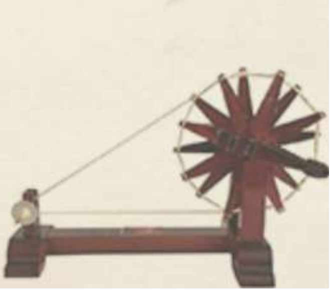

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	विषय एवं उप-विषय	2
3.	अतिथि परिचय	3-6
4.	कार्यक्रम विवरण	7-16
5	संलग्नक	
	संलग्नक 1: प्रतिभागियों की सूची	17-18
	संलग्नक 2: आयोजन समिति	19
	संलग्नक 3: समाचार पत्रों की झलकियाँ	20
	संलग्नक 4: कार्यक्रम की झलकियाँ	21

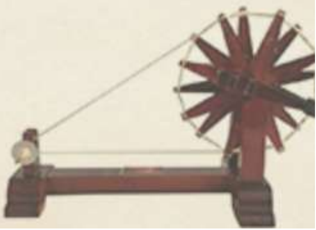

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुच्छेद 12 (CCC) के तहत स्थापित एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक और तकनीकी नवाचारों, सलाहकार सेवाओं, नीति विकास, वैश्विक भागीदारी और नेटवर्किंग के माध्यम से उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना है। आई.यू.सी.टी.ई. पाठ्यक्रम, पैडागॉजी, मूल्यांकन, शासन, नीति नियोजन और अनुसंधान के माध्यम से ऐसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों को तैयार करने की परिकल्पना करता है जो एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान करते हैं, जिससे भारत में उच्च शिक्षा को नया आकार मिलता है। यह संस्था शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने, वैश्विक सहयोग को सुविधाजनक बनाने और देश के भीतर शिक्षा के क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए नीतिगत बदलावों को कार्यान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात

गूजरात विद्यापीठ, महात्मा गांधी द्वारा 18 अक्टूबर 1920 को अहमदाबाद, गुजरात में स्थापित एक मानित विश्वविद्यालय है। ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्थापित यह सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता जैसे गांधीवादी सिद्धांतों पर जोर देता है। विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान, शिक्षा और ग्रामीण प्रबंधन सहित विभिन्न विषयों में स्नातक से लेकर शोध स्तर तक के पाठ्यक्रम संचालित करता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त गूजरात विद्यापीठ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने के अपने मिशन को नित्य गति प्रदान कर रहा है।

कार्यक्रम के बारे में

आज की दुनिया जलवायु परिवर्तन, असमानता, गरीबी और संघर्ष आदि चुनौतियों से जूझ रही है, जो वैश्विक स्थिरता के वातावरण को खतरे में डाल रही हैं। सतत विकास और शांति दीर्घकालिक समृद्धि और भविष्य की पीढ़ियों के लिए न्याय प्राप्त करने के लिए केंद्रीय विषय बन गए हैं। इस संदर्भ में महात्मा गांधी के शिक्षा पर विचार शाश्वत ज्ञान प्रदान करते हैं जो एक अधिक शांतिपूर्ण और स्थायी समाज बनाने के हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। उनकी शिक्षा की दृष्टि केवल साक्षरता या तकनीकी कौशल की प्राप्ति तक सीमित नहीं थी। यह व्यक्तियों के समग्र विकास पर केंद्रित थी, जिसमें अहिंसा, सत्य और पर्यावरण व सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान जैसे मूल्य शामिल थे। यह एक दिवसीय संगोष्ठी, जिसका शीर्षक ***"महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आलोक में शांति और संधारणीय विकास"*** है, गांधी के शिक्षा पर विचारों की समकालीन शांति और सतत विकास पर चर्चा में प्रासंगिकता को समझने का अवसर प्रदान किया गया है। इस कार्यक्रम में शिक्षकों, विद्वानों, छात्रों, नीति- निर्माताओं और अन्य हितधारकों को एक साथ लाकर गांधीवादी विचारों पर विचार किया गया और यह देखा गया कि वर्तमान शैक्षिक प्रथाओं, नीतियों के निर्माण, और सामुदायिक विकास पहलों में इनका कैसे उपयोग किया जा सकता है।

विषय

- शिक्षा पर गांधी के विचार को समझना
- गांधी के विचारों को आधुनिक शैक्षिक पद्धतियों से जोड़ना
- शिक्षा के माध्यम से शांति निर्माण
- संधारणीय विकास और नैतिक जीवन
- शिक्षा के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाना

उप-विषय

- शांति और अहिंसा शिक्षा के संदर्भ में गांधीजी के सिद्धांत
- आत्म निर्भरता तथा ग्रामीण विकास के माध्यम से संधारणीय विकास
- वैश्विक नागरिकता के लिए मूल्यपरक शिक्षा
- गांधी विचार तथा पर्यावरणीय मूल्य/आचार
- गांधी द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों के आलोक में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की पुनर्रचना।

अतिथि परिचय

माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी

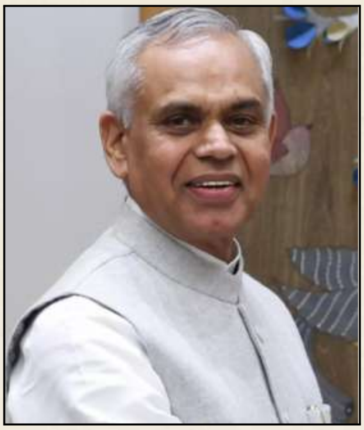

माननीय राज्यपाल महाराष्ट्र एवं गुजरात श्री आचार्य देवव्रत का जन्म 18 जनवरी 1959 को हुआ। इतिहास और हिन्दी में स्नातकोत्तर, बी.एड., योग विज्ञान में डिप्लोमा तथा प्राकृतिक चिकित्सा एवं योगिक विज्ञान में डॉक्टरेट उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। लगभग 45 वर्षों का शिक्षण एवं प्रशासनिक अनुभव रखते हुए उन्होंने 1981 से 2015 तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य के रूप में संस्थान को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक पहुँचाया। प्राकृतिक खेती, गौ संरक्षण, सामाजिक सद्भाव, नशामुक्ति, जल संरक्षण और “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” जैसे अभियानों को उन्होंने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल (2015-2019) रहते व्यापक रूप से लागू किया। 22 जुलाई 2019 को वे गुजरात के राज्यपाल बने और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में गुजरात के पाँच लाख से अधिक किसानों को रासायनिक खेती से प्राकृतिक खेती की ओर प्रेरित किया। 15 सितम्बर 2025 को उन्होंने महाराष्ट्र के राज्यपाल पद की शपथ ली। आचार्य देवव्रत भारतीय संस्कृति, वैदिक जीवनशैली और नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर सक्रिय हैं। उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं तथा वे कई विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति और सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. सुधीर कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुधीर कुमार सिंह दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में प्रोफेसर हैं। उन्होंने पी-एच.डी. और एम.फिल. की उपाधि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से प्राप्त की तथा स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार से पूरी की। उनका प्रमुख शोध क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय संबंध है। वे गोवा विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद, भारतीय जनसंचार संस्थान की गवर्निंग सोसाइटी और संस्कृति मंत्रालय की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानंद एंड ग्लोबल हार्मनी (2021), रेलिवेंस ऑफ अरबिंदो टुडे (2019) और रेलिवेंस ऑफ अम्बेडकर टुडे (2017) जैसी पुस्तकों का संपादन किया है। भारत की विदेश नीति, पंचायती राज और सुशासन पर उनके अनेक शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने आईसीएसएसआर द्वारा प्रायोजित कौटिल्य के शासन सिद्धांत पर शोध परियोजना का संचालन किया और 2018 में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा एसोसिएटशिप से सम्मानित हुए। वे एक सक्रिय शिक्षाविद्, शोधकर्ता और प्रशासक हैं।

प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी

प्रो. पृथ्वीश नाग एक प्रख्यात शिक्षाविद हैं जो वर्तमान में सोसाइटी फॉर हायर एजुकेशन एण्ड प्रेक्टिकल अप्लीकेशंस (एस.एच.ई.पी.ए.), वाराणसी के निदेशक और प्रशासक के रूप में कार्यरत हैं, जिन्होंने भू-स्थानिक विज्ञान और मानचित्रण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ (एम.जी. के.वी.पी.), वाराणसी के पूर्व कुलपति हैं। वे राष्ट्रीय विषयगत मानचित्रण संगठन (एन.टी.एम.ओ.) के पूर्व निदेशक और भारत के पूर्व महासर्वेक्षक भी हैं। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, ध्रुवीय अध्ययन, नदी स्वास्थ्य और भू-आकृति विज्ञान जैसे विषयों पर कई पुस्तकें और शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। भारत में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों और व्यवसायों के विकास को बढ़ावा देने वाली नीतियों के विकास और निर्माण में उनकी भूमिका के लिए उन्हें 2015 में इंडिया जियोस्पेशियल लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा, गांधी अध्ययन विभाग, गूजरात विद्यापीठ, गुजरात

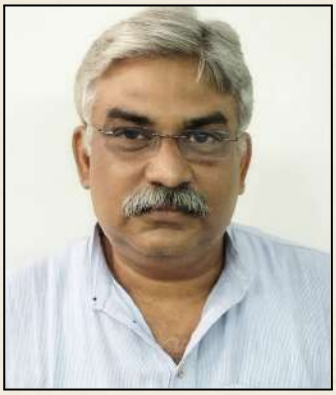

प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा, गांधी अध्ययन विभाग, गूजरात विद्यापीठ, गुजरात के अध्यक्ष हैं और गांधी के दर्शन, राजनीतिक चिंतन तथा उनके सामाजिक दृष्टिकोण से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों का अध्यापन करते हैं। उनका शोध क्षेत्र मुख्यतः गांधी के राजनीतिक विचार, शांति और अहिंसा का प्रश्न, राष्ट्रवाद की अवधारणा तथा उपनिवेशोत्तर अध्ययन (पोस्ट-कोलोनियल स्टडीज़) से जुड़ा हुआ है। वे गांधी के चिंतन, उनकी वैचारिक परंपरा तथा उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता पर गहन और निरंतर शोध करने वाले विद्वानों में से एक हैं। प्रो. मिश्रा गांधी अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रख्यात लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में हिंद स्वराज: ए डी-कंस्ट्रक्टिव रीडिंग (2012), पीस रिसर्च: इश्यूज़ एंड एप्लिकेशन (2015), पोज़िशन: गांधीज़ इंटरवेंशन इन कंटेम्परेरी डिस्कोर्स (2017), गांधियन ह्यूमनिज़्म एंड थ्योरी ऑफ सोशल हार्मनी (2019), गांधीज़ फिलॉसफी ऑफ एक्शन (2020) तथा गांधी इन कंटेम्परेरी कॉन्टेक्स्ट: बॉडी, सेल्फ, द अदर (2022) जैसी अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तकें शामिल हैं। ये सभी पुस्तकें न सिर्फ गांधी के बहुआयामी विचारों को नए दृष्टिकोण से समझने में सहायक हैं, बल्कि समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक विमर्श में गांधी के योगदान को भी नए आयाम प्रदान करती हैं। प्रो. मिश्रा ने गांधी-अध्ययन और राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं जैसे गांधी मार्ग, जर्नल ऑफ गांधीयन स्टडीज़ और द इंडियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस में भी कई शोध लेख प्रकाशित किए हैं। इन लेखों के माध्यम से उन्होंने गांधी के विचारों की आधुनिक संदर्भों में उपयोगिता, उनकी प्रासंगिकता तथा शांतिपूर्ण समाज-निर्माण के उनके सिद्धांतों को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार, प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा अपने गहन अध्ययनों, विचारोत्तेजक लेखन और समर्पित अध्यापन के कारण गांधी विचारधारा के एक प्रमुख व्याख्याता के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनका कार्य न केवल अकादमिक जगत बल्कि व्यापक सामाजिक विमर्श के लिए भी अत्यंत सार्थक और प्रेरणादायक है।

डॉ. ओम प्रकाश चौधरी, श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

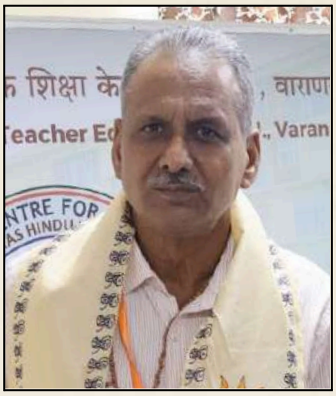

डॉ. ओम प्रकाश चौधरी श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. कॉलेज, वाराणसी में मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष तथा कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता के रूप में दीर्घकाल तक उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने वाले एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् हैं। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम.ए. एवं पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की, साथ ही मार्गदर्शन मनोविज्ञान में डिप्लोमा, अपराध विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा एल.एल.बी. की उपाधियाँ भी अर्जित कीं। उनके व्यावसायिक जीवन की शुरुआत गिरी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज़, लखनऊ में जूनियर रिसर्च इन्वेस्टिगेटर के रूप में हुई, जिसके पश्चात वे के.जी. मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में शोध सहायक और सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, लखनऊ में मनोवैज्ञानिक के रूप में कार्यरत रहे। वर्ष 1995 से वे श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. कॉलेज से जुड़े और अपने समृद्ध 35 वर्षों के शिक्षण अनुभव के दौरान अनेक एम.ए. शोध प्रबंधों व पी-एच.डी. शोधों का मार्गदर्शन किया। डॉ. चौधरी ने यूपीपीएससी, एमपीपीएससी, जेपीएससी, एमएसएससी आयोग तथा उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। उनके शैक्षणिक योगदान में 26 पुस्तक अध्याय, 4 महत्वपूर्ण पुस्तकें, 25 शोध पत्र और 60 से अधिक लेख शामिल हैं। वे कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक संस्थाओं से संबद्ध रहे हैं तथा इंडियन एक्सप्लोरर ऑफ सोशल साइंसेज़ एंड ह्यूमैनिटीज के सहयोगी संपादक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। उनकी विद्वतापूर्ण एवं संस्थागत सेवाओं को 'विशिष्ट सेवा सम्मान', 'राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार', 'सर्वोत्तम शिक्षक सम्मान', 'शिक्षा भूषण सम्मान' और 'एनवायरनमेंट वॉरियर अवॉर्ड' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया गया है। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों की कार्यकारी परिषद एवं अध्ययन बोर्डों में सदस्य के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. विनोद कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. विनोद कुमार सिंह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के शिक्षा संकाय में सहायक प्रोफेसर हैं। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.एड. (1999), एम.एड. (2002) तथा पीएच.डी. (2006) की उपाधि प्राप्त की। उनका प्रमुख शोध क्षेत्र गणित शिक्षा, शिक्षा के समकालीन मुद्दे तथा शिक्षा के दार्शनिक आधार हैं। वे "असेसमेन्ट फॉर लर्निंग", "टीचिंग ऑफ मैथमैटिक्स", "टूल्स एण्ड टेक्निकस ऑफ डाटा एनालिसिस" आदि पाठ्यक्रमों का अध्यापन करते हैं। डॉ. सिंह ने कई शोध परियोजनाओं का संचालन किया है, जिनमें "गणितीय अवधारणाओं पर आधारित शैक्षिक खिलौने एवं खेलों का विकास" (इंस्टिट्यूट ऑफ एमीनेंस, बी.एच.यू. द्वारा वित्तपोषित) उल्लेखनीय है। उन्होंने अनेक पी-एच.डी. शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया है, जिनके शोध विषय गणितीय समस्या-समाधान क्षमता, मास्टरी लर्निंग रणनीति, इंटर्नशिप कार्यक्रम का मूल्यांकन और शैक्षिक हस्तक्षेप कार्यक्रम जैसे विविध क्षेत्रों से संबंधित रहे हैं। डॉ. सिंह शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और विद्यार्थियों की सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं।

प्रो. दीनानाथ सिंह, डी.ए.वी., स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

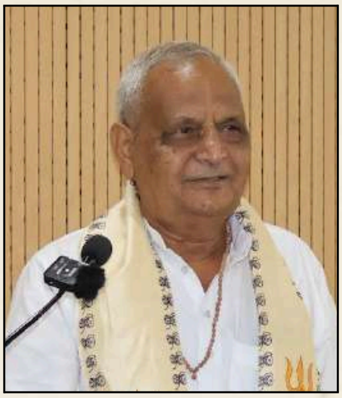

प्रो. दीनानाथ सिंह राजनीति विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर तथा विद्यावारीधि हैं। आपने राजनीति विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी तथा डी.ए.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी में 36 वर्षों से अधिक समय तक अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। आप राज्यपाल, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय (वी.बी.एस.पी.यू.), जौनपुर के कार्यकारी परिषद् के नामित सदस्य रहे हैं। प्रो. सिंह को विद्वत् सम्मान, काशी रत्न सम्मान एवं शिक्षा रत्न आदि अनेक सम्मानों से आभूषित किया गया है।

कार्यक्रम विवरण

उद्घाटन सत्र

गुजरात प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी

माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी का यह व्याख्यान जो गांधी जी के जीवन दर्शन और उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर केंद्रित था, उन्होंने आज के समय में उनके आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता पर बल

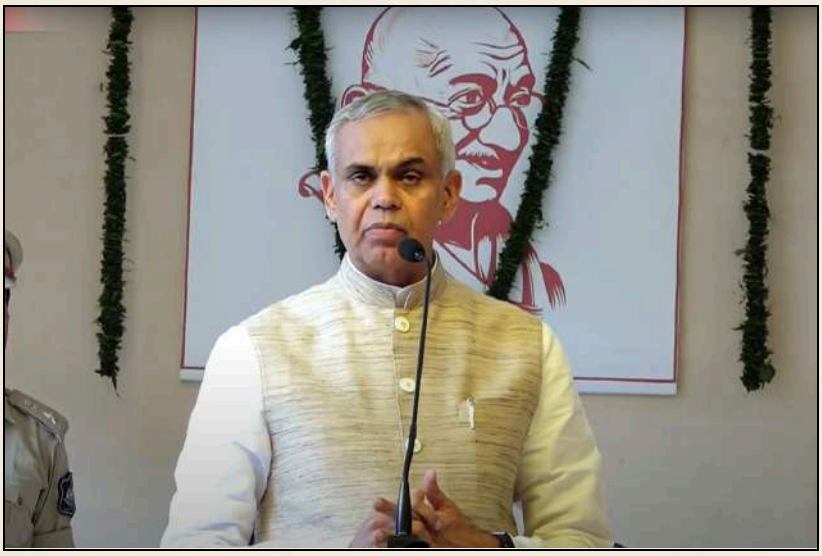

दिया। उनका मानना था कि "मेरा जीवन ही मेरा चरित्र संदेश है," यह वाक्य गांधीजी के व्यक्तित्व और उनके जीवन प्रयोजनों को प्रतिबिंबित करता है। आचार्य देवव्रत जी ने सत्य और अहिंसा को अपनाने के महत्व पर जोर दिया, जो विश्व कल्याण की दिशा में अपरिहार्य हैं।

आचार्य देवव्रत जी के अनुसार, सत्याग्रह न केवल एक राजनीतिक रणनीति थी, बल्कि यह एक व्यापक जीवन शैली है, जो हर व्यक्ति को सत्य और नैतिकता के पथ पर चलने का संदेश देती है।

श्री देवव्रत जी ने गांधीजी के इस विचार को बल दिया कि भारत की समृद्धि गाँवों से शुरू होती है। उन्होंने कहा कि गाँवों के विकास से ही देश के सर्वांगीण विकास की संकल्पना साकार हो सकती है। इसके लिए गांधीजी के 'स्वग्राम मिशन' के अंतर्गत भारतीय कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की बात की गई, जिससे गाँव का धन गाँव में ही रहे और गाँव आत्मनिर्भर बन सकें। गांधीजी के 'अन्त्योदय' के सिद्धांत के अनुसार, समाज के सबसे पिछड़े वर्ग तक सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह सिद्धांत न केवल भारतीय समाज में, बल्कि विश्व समुदाय में भी समानता और न्याय को बढ़ावा देता है।

गांधीजी की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति और 'सिंपल लिविंग हाई थिंकिंग' की अवधारणा पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। आचार्य देवव्रत जी ने बताया कि गांधीजी का मानना था कि सरल जीवन और उच्च विचार ही मानव को सच्चा सुख और शांति प्रदान कर सकते हैं। वर्तमान विश्व में अशांति और संकटों को देखते हुए, आचार्य देवव्रत जी ने गांधीजी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार ये सिद्धांत आज के समय में भी विश्व शांति और सद्भावना के लिए महत्वपूर्ण हैं।

आचार्य देवव्रत जी ने प्राकृतिक खेती के महत्व को रेखांकित किया और इसे भविष्य की खेती बताया। उन्होंने कहा कि इस खेती के माध्यम से न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व को लाभ हो सकता है, क्योंकि यह खेती पर्यावरण के अनुकूल होती है और यह स्थायी विकास को संभव बनाती है।

गुजरात सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए दी जा रही वित्तीय सहायता की जानकारी देकर आचार्य देवव्रत जी ने बताया कि किस प्रकार राज्य सरकार इस दिशा में प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि यह पहल किसानों को इस खेती की ओर आकर्षित करने में मदद करेगी और साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा में भी योगदान

देगी। इस प्रकार, आचार्य देवव्रत जी के व्याख्यान ने गांधीजी के जीवन दर्शन और सिद्धांतों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बनाया। उनके विचारों को समझना और उन्हें अपनाना आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि गांधीजी के समय में था।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकाय प्रमुख, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र,वाराणसी

प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने अपने सारगर्भित विषयोपस्थापन में आधुनिक बौद्धिक संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि समकालीन युग में मानवीय 'मेधा' और 'प्रज्ञा', सूचनाओं (Information) के अंबार में कहीं लुप्त हो गई हैं। उन्होंने बल दिया कि वर्तमान समय की मुख्य चुनौती 'सूचना' से पुनः 'प्रज्ञा' (Wisdom) तक की वैचारिक यात्रा तय करना है। गांधीवादी दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि महात्मा गांधी संधारणीय विकास (Sustainable Development) के प्रथम द्रष्टा थे, जिनके 'हिन्द

स्वराज' (1909) और 'सर्वोदय' जैसे विचार ब्रटलैंड कमीशन और रियो अर्थ समिट जैसी आधुनिक अवधारणाओं से दशकों पूर्व ही पर्यावरण संकट और मानवीय लालच के प्रति सचेत कर रहे थे। गांधी जी का प्रसिद्ध सिद्धांत "प्रकृति के पास मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, किंतु लालच के लिए नहीं", वस्तुतः ईशोपनिषद के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' के दर्शन का ही व्यावहारिक विस्तार है। इसके साथ ही, उन्होंने भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री जी की 120वीं जयंती के पावन अवसर पर उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को याद किया। उन्होंने शास्त्री जी को हरित और श्वेत क्रांति का प्रणेता, नारी सशक्तिकरण का पक्षधर और सार्वजनिक जीवन में शुचिता हेतु भ्रष्टाचार विरोधी समिति के गठन का सूत्रधार बताया। अंत में, उन्होंने गांधीवादी मूल्यों की अपरिहार्यता को स्वीकार करते हुए समस्त आयोजन समिति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

डॉ. सुधीर कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सुधीर कुमार सिंह जी ने अपने व्याख्यान में गांधी जी के राष्ट्र निर्माण में अत्यधिक योगदान को याद किया। उन्होंने गांधीजी के जीवन दर्शन और शिक्षाओं को विस्तार से प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने न केवल भारत की स्वतंत्रता के लिए आंदोलन किया बल्कि एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जहां हर व्यक्ति को शिक्षित किया जा सके और जहां शिक्षा जीवन के अँधेरे को प्रकाशित करने का प्रकाश उपलब्ध कराती है। उनकी शिक्षा नीतियों में बुनियादी शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व था, जिसे उन्होंने 'नई तालीम' के रूप में प्रस्तावित किया, जिसका उद्देश्य यह था कि शिक्षा व्यावहारिक हो और यह समाज के हर वर्ग तक पहुँच सके।

उन्होंने कबीरदास के विचार 'वृक्ष कबहुँ नहिं फल न भखै' का उल्लेख किया, जो परमार्थ पर केंद्रित है। गांधी जी का जीवन भी इसी दर्शन पर आधारित था। उन्होंने आफ्रीका में भी लोगों के लिए लड़ाई लड़ी और भारत में

चंपारण के आंदोलन के माध्यम से भी यही दिखाया कि उनकी लड़ाई स्वयं के लिए नहीं बल्कि समाज के लिए थी।

सुधीर सिंह जी ने कान्ट के 'परपीचुअल पीस' (perpetual peace) के सिद्धांत को भी साझा किया, जिसमें

यह बताया गया है कि एक जगह पर अशांति का असर पूरे विश्व पर पड़ता है। गांधीजी को यू.एन.ओ. द्वारा शांति का सबसे बड़ा दूत माना गया है, और उनकी शांति स्थापित करने की नीतियाँ आज भी विश्व भर में प्रासंगिक हैं।

उन्होंने विश्व युद्धों, स्टालिन और लेनिन के शासन, और अन्य वैश्विक संघर्षों का उल्लेख किया, जिन्होंने मानवता को गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि शांति स्थापित करने के लिए विश्व को गांधी और विवेकानंद के विचारों की ओर लौटना होगा, क्योंकि ये विचार सबसे बड़े पैमाने पर शांति स्थापित कर सकते हैं।

उन्होंने गांधीजी के 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सिद्धांत को भी साझा किया, जो आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय संकटों का सामना करने के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि कैसे गांधीजी के विचार पृथ्वी और उसके संसाधनों के संरक्षण में मदद कर सकते हैं।

आधुनिक विश्व में जहां अनेक स्थानों पर अत्यधिक वर्षा और कहीं पर अनावृष्टि की समस्याएँ हैं, वहां गांधीजी की शिक्षाएँ और भी प्रासंगिक हो जाती हैं। सुधीर सिंह जी ने कहा कि यदि हमें इन समस्याओं का सामना करना है, तो हमें गांधीजी के रास्ते पर चलकर संधारणीय विकास और समावेशी विकास की ओर अग्रसर होना होगा।

प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, काशी विद्यापीठ,वाराणसी

प्रो. पृथ्वीश नाग ने अपने व्याख्यान में महात्मा गांधी के योगदान को विशद रूप से प्रस्तुत किया। उनका

व्याख्यान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में स्थित गांधी कक्ष की चर्चा से आरम्भ हुआ, जो उस विश्वविद्यालय की सबसे पुरानी इमारत है और गांधीजी की धरोहर को संजोए हुए है।

प्रो. नाग ने बताया कि भारत सरकार के संस्कृति विभाग और गांधीजी के नाती तथा तत्कालीन बंगाल के गवर्नर की अध्यक्षता में

गांधी हेरिटेज साइट्स का संरक्षण और संवर्धन किया गया। इस प्रयास में गांधीजी के जीवन से जुड़ी घटनाओं के स्थलों को टैग किया गया, जिससे उनके योगदान को विश्व पटल पर उचित स्थान मिल सके।

गांधीजी के आंदोलन के विविध पहलुओं पर चर्चा करते हुए प्रोफेसर नाग ने बताया कि गांधीजी का आंदोलन केवल राजनीतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक पहलुओं से भी युक्त था। उन्होंने भारत और विश्व के प्रत्येक कोने के लिए अपने आंदोलन को समर्पित किया था।

गांधीजी की वैश्विक दृष्टि का उल्लेख करते हुए प्रोफेसर ने कहा कि गांधीजी ने विश्व के हर देश के स्वतंत्र होने की आवश्यकता पर बल दिया था, क्योंकि उनका मानना था कि एक जगह पर शांति और स्वतंत्रता की स्थापना तभी संभव है जब हर जगह शांति हो। उन्होंने कहा, "जब तक रूस, चीन, जापान स्वतंत्र नहीं होंगे, हम कुछ नहीं कर सकते।"

भारतीय आज़ादी के आंदोलन की तुलना में अन्य देशों की क्रांतियों पर विचार करते हुए उन्होंने उल्लेख किया कि भारतीय आंदोलन अहिंसा पर आधारित था और इसमें समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने का प्रयास किया गया था। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसमें गोलियां नहीं बल्कि शांति के मार्ग को अपनाया गया था।

बंगाल क्राइसिस, हिरोशिमा बम कांड और अन्य वैश्विक घटनाओं की चर्चा करते हुए प्रो. नाग ने बताया कि गांधीजी ने हमेशा इन घटनाओं पर बहस जारी रखी और शांति के मार्ग को ही सर्वोपरि माना। उन्होंने सुभाष चंद्र बोस के साथ अपने संबंधों पर भी प्रकाश डाला, जिन्हें उन्होंने भले ही कभी गलत समझा, परंतु साथ ही उन्हें एक महान देशभक्त भी माना।

प्रो. नाग ने गांधीजी के 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत का भी उल्लेख किया, जिसमें गांधीजी ने कहा था कि हमें समाज को कुछ वापस करना चाहिए, यही सतत विकास का लक्ष्य है। इसी तरह, उन्होंने सामाजिक आंदोलनों जैसे भूदान आंदोलन की आवश्यकता पर बल दिया, जो सामाजिक परिवर्तन और स्थिरता के मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

अंत में उन्होंने कहा कि गांधीजी का मार्ग न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता है। उनके विचार और दर्शन आज भी हमें प्रेरणा देते हैं और हमें एक बेहतर और संवेदनशील समाज की ओर ले जाते हैं।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

अध्यक्षता कर रहे अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने अपने संबोधन में गांधीवादी 'बुनियादी शिक्षा' (Nai Talim) के व्यावहारिक अनुभवों को साझा करते हुए स्पष्ट किया कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को श्रम और अपनी जड़ों से जोड़ना है। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन के

संस्मरणों के माध्यम से बताया कि सुतली कातना और बागवानी जैसे कार्य केवल कौशल विकास नहीं, बल्कि अहंकार मुक्ति और स्वावलंबन के संस्कार थे। संधारणीय विकास (Sustainable Development) की व्याख्या करते हुए उन्होंने इसे भारतीय मनीषा के 'सर्वे भवंतु सुखिनः' और 'सर्वोदय' दर्शन का आधुनिक विस्तार बताया, जहाँ विकास केवल मानव-केंद्रित न होकर संपूर्ण चराचर जगत जैसे पशु-पक्षी, वृक्ष और पर्वतों के संरक्षण पर आधारित है। प्रो. सिंह ने यूनेस्को के सिद्धांत और अपनी स्वरचित कविता 'शांति की तलाश में' के माध्यम से रेखांकित किया कि युद्ध और अशांति का मूल मनुष्य के मस्तिष्क में होता है, अतः शांति की स्थापना भी मानसिक धरातल पर ही संभव है। उन्होंने भगवान राम के आदर्शों का उदाहरण देते हुए पौरुष के साथ सामर्थ्य के शांतिपूर्ण उपयोग की कला पर बल दिया। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विभिन्न देशों के मध्य जारी संघर्षों का हवाला देते हुए उन्होंने जोर दिया कि अशांति के वातावरण में कोई भी विकास 'टिकाऊ' या 'लोकोपयोगी' नहीं हो सकता; अतः भविष्य को सुरक्षित करने के लिए हमें पुनः विवेकानंद और गांधी के विचारों की ओर लौटना होगा। अंत में, उन्होंने गांधी और शास्त्री जी की जयंती के पावन अवसर पर उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आयोजन की सफलता पर सभी का आभार प्रकट किया।

शोधपत्र वाचन सत्र

अन्य प्रतिभागियों के सत्र में, जो आई.यू.सी.टी.ई., बी.एच.यू., वाराणसी में ऑफ़लाइन रूप से संचालित किया

गया, विचारों का एक गहन विमर्श हुआ। इस सत्र में उनके विचारों की गहराई और उसकी व्यापकता पर चर्चा की गई, जो देशों की सीमाओं से परे होकर सांस्कृतिक, शैक्षणिक और दार्शनिक पहलुओं तक फैली हुई थी।

उनके विचारों में संधारित विकास, शांति, सत्याग्रह और समाज की समस्याओं के निराकरण के उपाय शामिल थे, जो कि ग्लोबल सिटिजनशिप एजुकेशन (जी.सी.ई.डी.) और सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (एस.डी.जी.) में भी प्रतिबिंबित होते हैं। ये विचार न केवल भारत बल्कि ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ देशों की चुनौतियों का हल प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

इस सत्र में उन्होंने शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई को पाटने, रोजगार की समस्या को दूर करने और एक समग्र विकास को बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या, पेडागॉगी, कौशल और दृष्टिकोण को बड़े पैमाने पर योगदान देने वाले तत्वों के रूप में उल्लिखित किया। उनके अनुसार, शिक्षा एक ऐसी इको सिस्टम बनाती है, जो उद्योग, शिक्षा और अर्थव्यवस्था को आपस में जोड़ती है।

उनके विचारों में सत्य, अहिंसा और न्याय के सिद्धांतों का पालन करते हुए, उन्होंने नई तालीम, अनुभव आधारित शिक्षा और व्यावसायिक विकास की महत्ता पर जोर दिया। वे मानते थे कि सतत विकास लक्ष्यों 2030 में गांधीजी के विचारों का 90 प्रतिशत से भी अधिक समावेश है।

गांधीजी ने हमेशा प्राकृतिक संसाधनों पर आम लोगों के अधिकारों की बात की। उन्होंने वायु, जल और अनाज की पवित्रता पर जोर दिया था, जिसे सभी के साथ न्यायसंगत ढंग से बांटने की आवश्यकता है। काठियावाड़ में उन्होंने वर्षा जल संचयन की स्थापना की, जो उस समय पानी की समस्या का एक समाधान था।

उन्होंने लघु और कुटीर उद्योगों को बेरोजगारी को दूर करने का एक सपना माना था। इसके अलावा, उन्होंने कौशल आधारित शिक्षा पर जोर दिया, जो पलायन को रोकने में कारगर सिद्ध हो सकती है।

उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का विकास नहीं बल्कि अध्यात्मिक और नैतिक विकास भी होना चाहिए। उन्होंने प्रतिस्पर्धा की बजाय सहयोग पर बल दिया और कहा कि समाज को बदलने के लिए पहले स्वयं में बदलाव लाना आवश्यक है।

इस तरह से, उनके व्याख्यान ने न केवल शिक्षा की व्यापकता को दर्शाया बल्कि यह भी बताया कि कैसे गांधीजी के विचार आज के समय में भी प्रासंगिक हैं और हमें एक बेहतर समाज की ओर ले जा सकते हैं।

शोध पत्र प्रस्तुति के सत्र में डॉ. विनोद कुमार सिंह और प्रो. ओम प्रकाश चौबे ने अपने व्याख्यानों में महात्मा गांधी की शिक्षाओं और उनके नेतृत्व के गुणों पर गहन चिंतन किया। दोनों विद्वानों ने गांधीजी के दर्शन को आधुनिक संदर्भों में उतारने के लिए व्यापक विचार व्यक्त किए, जिससे उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता और भी स्पष्ट हुई।

डॉ. विनोद कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. सिंह ने महात्मा गांधी के नेतृत्व के गुणों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि गांधीजी में नेतृत्व का वह असाधारण गुण था जो उन्हें दृढ़ निश्चयी बनाता था। उनके नेतृत्व में सत्य और अहिंसा के प्रति अटूट समर्पण था, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा प्रदान की। डॉ. सिंह ने यह भी बताया कि गांधीजी के विचारों को वैश्विक संदर्भ में सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.) और ग्लोबल सिटीजेनशिप एजुकेशन (जी.सी.ई.डी.) में समाहित किया गया है, जो दिखाता है कि उनकी शिक्षाएँ आज भी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण हैं।

प्रो. ओम प्रकाश चौबे, श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

प्रो. चौबे ने गांधीजी के विचारों को व्यावहारिक जीवन में उतारने की बात की। उन्होंने खादी ग्रामोद्योग, पीपल पेड़ लगाने जैसे पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता अभियान जैसी गतिविधियों के महत्व पर बल दिया। प्रो. चौबे ने बताया कि उन्होंने गया से राजगीर तक पीपल के पेड़ लगाने का अभियान चलाया, जिससे न केवल पर्यावरण की स्वच्छता में योगदान दिया गया बल्कि यह भी दिखाया गया कि कैसे संगठित प्रयास से बड़े परिवर्तन संभव हैं।

उन्होंने इच्छाओं को सीमित रखने और संधारित विकास के माध्यम से वैश्विक शांति स्थापित करने की बात की। उनका मानना था कि सत्य का पालन करना चाहिए, भले ही आज के समय में इसकी कठिनाइयां हों। यह शिक्षा और उद्योग के बीच के संबंधों को मजबूत करने, रोजगार की समस्याओं को समाप्त करने और शिक्षा के माध्यम से एक समग्र और समावेशी समाज की स्थापना में योगदान दे सकती है।

समापन सत्र

प्रो. दीनानाथ सिंह, डी.ए.वी., पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

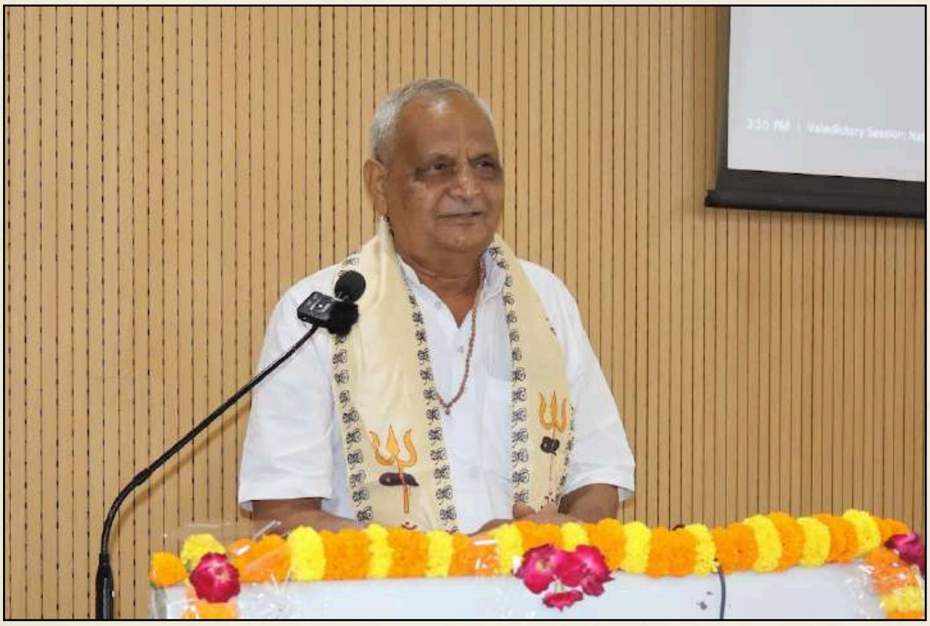

प्रो. दीनानाथ सिंह का उद्बोधन महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी के व्यक्तित्व और उनकी विचारधाराओं के गहन अध्ययन पर केंद्रित था। इस सत्र में उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक महान व्यक्ति का व्यक्तित्व और उनके विचार वातावरण का निर्माण करते हैं और विषय का प्रस्फुटन करते हैं। प्रो. सिंह ने गांधी जी के दो अलग-अलग व्यक्तित्व कालखंडों का उल्लेख किया: पहला 1863 से 1915 तक का और दूसरा 1915 से 1948 तक का। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि गांधीजी के जीवन का हर पहलू सिर्फ स्वाधीनता आंदोलन तक सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने अनेक दर्शनों की रचना की थी।

गांधीजी की हिंदू धर्म के प्रति गहरी आस्था को प्रो. सिंह ने विस्तार से बताया, जहां गांधीजी ने स्वयं को 'एक्सीडेंटल हिन्दू' नहीं माना बल्कि ऐसा हिन्दू बताया जिसका धर्म में गहरा विश्वास था। गांधीजी ने गीता को न केवल पढ़ा बल्कि उसकी गहराई से समझ बनाई और किसी भी व्याख्या पर निर्भर नहीं रहे। यह उनकी आत्मनिर्भरता का प्रतीक था।

अफ्रीका में उनके द्वारा किए गए कार्यों का जिक्र करते हुए प्रो. सिंह ने बताया कि वहां के दो अलग-अलग रास्तों यथा एक 'अफ्रीकी लोगों के लिए' और दूसरा 'काले लोगों के लिए' की भेदभावपूर्ण व्यवस्था के खिलाफ गांधीजी ने संघर्ष किया। इस प्रकार की विषमता के खिलाफ उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया। प्रो. सिंह ने लाल बहादुर शास्त्री जी की सादगी का भी उल्लेख किया, जिन्होंने एक कांग्रेस सम्मेलन में शामिल होने के लिए अपने भीगे हुए एकमात्र कुर्ता-धोती को सुखाकर और नेहरूजी द्वारा दूसरा धोती देने की पेशकश को इनकार करते हुए कहना कि उनके पास पर्याप्त सामर्थ्य नहीं है। यह शास्त्री जी की विनम्रता और आत्म-निर्भरता को दर्शाता है।

सेवा और समर्पण के गांधीजी के विचारों को आगे बढ़ाते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि गांधीजी की शिक्षाएँ और उनका जीवन सम्पूर्ण मानवता के लिए एक उदाहरण हैं। उन्होंने विश्व में शांति स्थापना के लिए सदैव अहिंसा और सत्य के मार्ग को अपनाया। गांधीजी का मानना था कि सच्ची शांति तभी स्थापित हो सकती है जब हम स्वयं में और समाज में सत्य और अहिंसा को उतारें।

उन्होनें गांधीजी के विचारों को वर्तमान दुनिया में लागू करने की बात कही, जहां वैश्विक समस्याएं जैसे पर्यावरण संकट, सामाजिक विषमता और आर्थिक असमानताएँ हमें चुनौती दे रही हैं। प्रो. सिंह ने गांधीजी के सिद्धांतों को अपनाकर इन समस्याओं का समाधान खोजने की वकालत की, जिससे न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए स्थायी शांति और समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

प्रो. प्रेम आनंद मिश्र, विभागाध्यक्ष, गांधी अध्ययन विभाग एवं समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी. गूजरात विद्यापीठ, गुजरात

प्रो. प्रेम आनंद मिश्र ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आज की शिक्षा और जीवन के बीच के संबंधों पर गहराई से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज की शिक्षा प्रणाली और जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों के बीच की खाई चिंताजनक रूप से बढ़ रही है और इस विषय में महात्मा गांधी के दर्शन को समझने और अपनाने की आवश्यकता है।

प्रो. मिश्र ने बताया कि गांधीजी ने शिक्षा को जीवन के अनुभवों से जोड़ने का एक अद्वितीय तरीका प्रस्तावित किया था। उनकी बुनियादी तालीम की अवधारणा और हस्तशिल्प की शिक्षा न केवल विद्यार्थियों को कौशल प्रदान करती

है, बल्कि उन्हें जीवन के व्यावहारिक पहलुओं से भी जोड़ती है। यह शिक्षा तंत्र न केवल ज्ञान की गहराई प्रदान करता है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी मजबूत करता है।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली अक्सर सिर्फ नौकरी पाने के लिए तैयार करती है, जिससे समाज से उसका संबंध कम होता जा रहा है। प्रो. मिश्र ने जोर देकर कहा कि शिक्षित व्यक्ति का यह मूल कर्तव्य होना चाहिए कि वह समाज को कुछ वापस दे सके। उन्होंने समाज के साथ संवाद स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे कि शिक्षित व्यक्ति और समाज दोनों का विकास संभव हो सके।

गांधीजी के दर्शन के नए परिप्रेक्ष्य को समझाते हुए प्रो. मिश्र ने बताया कि गांधीजी ने शिक्षा को जीवन की गहराई से जोड़ा। उनका मानना था कि शिक्षा से व्यक्ति में न केवल बौद्धिक विकास होना चाहिए, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। गांधीजी की शिक्षा दर्शन में समग्रता थी जिसमें शिक्षा, श्रम और समाज सेवा के महत्व को समान रूप से बताया गया था।

इसके अतिरिक्त, प्रो. मिश्र ने जोर देकर कहा कि आज के शिक्षाविदों को गांधीजी की शिक्षा नीतियों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिससे वे समाज के साथ अपनी शिक्षा को जोड़ सकें और सामाजिक विकास में योगदान दे सकें। उन्होंने बताया कि गांधीजी की शिक्षा नीतियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी कि उस समय थीं, और ये हमें एक बेहतर और जिम्मेदार समाज के निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन कर सकती हैं।

प्रो. मिश्र का उद्बोधन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा को सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू से जोड़ने की आवश्यकता है। इस तरह की शिक्षा से ही हम एक सार्थक समाज का निर्माण कर सकते हैं जहां हर व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने का अवसर मिले।

परिणाम

इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप प्रतिभागियों में गांधीवादी शिक्षा-दृष्टि के मूल सिद्धांतों: सत्य, अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्य की गहन समझ विकसित हुई और वे शिक्षा के माध्यम से शांति-निर्माण की भूमिका को अधिक स्पष्ट रूप से समझ सके। सतत विकास को शैक्षिक प्रक्रियाओं से जोड़ने की उनकी क्षमता सुदृढ़ हो सकी, जिससे मूल्य-आधारित और पर्यावरण-संवेदनशील शिक्षण के नए आयाम सामने आये। कार्यक्रम के माध्यम से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गांधीवादी आदर्शों के समावेश हेतु नवाचारी शैक्षणिक मॉडल तथा व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रस्तावित की गई। प्रतिभागियों में ग्रामीण शिक्षा, स्वावलंबन और समुदाय-आधारित विकास के गांधीवादी विचारों की नई व्याख्याएँ उभरकर सामने आईं। इसके साथ ही वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देने वाली मूल्य-आधारित शिक्षा के महत्व पर एक व्यापक सहमति निर्मित हुई।

शैक्षणिक संस्थानों में अहिंसक संचार, संघर्ष-समाधान की प्रक्रियाएँ तथा शांति-आधारित शिक्षण पद्धतियों को लागू करने के ठोस उपायों पर विचार-विमर्श हुआ। पर्यावरणीय नैतिकता और सतत जीवनशैली के प्रति प्रतिभागियों की संवेदनशीलता बढ़ी, जिससे छात्रों में पर्यावरण चेतना विकसित करने के नए मार्ग पहचाने गए। नीति-निर्माताओं और शिक्षकों को गांधीवादी विचारों के आधार पर शैक्षिक सुधारों के लिए दिशा-निर्देश प्राप्त हुए, जिससे शिक्षा के माध्यम से सामाजिक असमानता को कम करने और सामाजिक-पर्यावरणीय न्याय को बढ़ावा देने के उपाय सुदृढ़ हो सके।

इस कार्यक्रम से प्रतिभागियों में स्थानीय और वैश्विक चुनौतियों को शांति एवं सतत विकास के संदर्भ में समझने की क्षमता बढ़ी, साथ ही सामुदायिक नेतृत्व और सहभागिता को मजबूत करने के लिए शिक्षा के नए आयाम

विकसित हुए। तकनीकी और वैश्वीकरण के युग में गांधी के शैक्षिक विचारों को व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए नवाचारी दृष्टिकोण स्थापित हुए। अंततः यह सेमिनार प्रतिभागियों को एक अधिक समावेशी, शांतिपूर्ण एवं टिकाऊ समाज निर्माण हेतु सक्रिय और सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

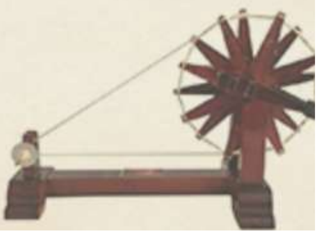

संलग्नक 1: प्रतिभागियों की सूची

Participant's Name	Designation	Name of the Institute/Organization/University
Prosenjit Saha	Assistant Professor	Visva Bharati
Jitendra Singh	Research Scholar	Lucknow University, Lucknow
Shikha Ojha	Research Scholar	Babasaheb Bheem Rao Ambedkar University, Lucknow
Sumi. V.S	Assistant Professor	Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
Md Haider Ali	Research Scholar	Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
Nahid Anjum	Research Scholar	Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
Amit Joshi	Research Scholar	Soban Singh Jeena University Almora
Dhananjai Singh	Assistant Professor	Ranveer Rananjay Post Graduate College Amethi U P
Shrutika Shukla	Research Scholar	Guru Ghasidas University
Soni Devi	Research Scholar	D. S. N. P. G. College Unnao. U.P.
Shailendra Singh	Assistant Professor	Post Graduate College, Ghazipur U.P.
Gyanendra Nath Singh	Assistant Professor	Shri Murli Manohar Town Post Graduate College, Ballia.
Ashish Tamta	Assistant Professor	Uttarakhand Open University
Sikandar Yadav	Research Scholar	Banaras Hindu University
Suman Kumari Yadav	Assistant Professor	Allahabad Degree College, Prayagraj
Uday Kumar Roy	Assistant Professor	ST. Paul Teachers Training College Birsingpur Samastipur, Bihar
Vinay Kumar	Assistant Professor	Patna Training College, Patna University, Patna.
Vivek Kumar Tripathi	Research Scholar	University of lucknow
Dilip Singh	Research Scholar	Banaras Hindu University
Ajit Kumar Vishvakarma	Research Scholar	Bhagwant University Ajmer Rajasthan India
Ranjeet Kumar Gupta	Research Scholar	Jananayak Chandrashekhar University Ballia
Sanjay Kumar Yadav	Assistant Professor	Indian Institute of Teacher Education Gandhinagar
Pradeep Kumar Singh	Research Scholar	Banaras Hindu University
Suprabha Dey	Assistant Professor	Amity University, Lucknow Campus
Susan Kaji	Research Scholar	Arunachal University of Studies, Namsai, A.P.
Sumathi Poleboina	Assistant Professor	Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, A Central University, Bilaspur, Chhattishgarh
Astik Mishra	Research Scholar	Mahatma Gandhi Central University
Dr.Kanaiyalal.Nayak	Professor	Gujarat Vidyapith, Ahmedabad
Kanchan Kumari	Research Scholar	Mahatma Gandhi Central University

Chandra Shekhar	Assistant Professor	District Institute of Education and Training Jaferpur,Azamgarh
Prasenjit Roy	Assistant Professor	Lady Irwin College, University of Delhi
Ashutosh Ranjan	Research Scholar	C.M.P Degree College. University of Allahabad
Shalu Sonkar	Research Scholar	UPRTOU
Savitri	Research Scholar	Mahila mahavidyalaya kidwai nagar, Kanpur
Shubhra Singha Chowdhury	Research Scholar	Mahatma Gandhi Central University
Ranjana Mishra	Assistant Professor	Shri Murli Manohar Town Post Graduate College, Ballia
Vinay Kumar	Assistant Professor	Patna Training College,Patna University
Bhavesh M.Modi	Assistant Professor	Department Of Education,Veer Narmad South Gujarat University,Surat
Narendra Giri	Assistant Professor	Govt Naveen Collage Nawagarh Distt Janjgir Champa Chhattisgarh
Anand Kumar Tripathi	Assistant Professor	Khardiha Mahavidyalaya, Khardiha, Ghazipur,UP
Nabani Barman	Assistant Professor	Govt. Teachers' Training College, Malda
Dr Manu Mishra	Assistant Professor	VSSD COLLEGE,KANPUR
Anand Sahu	Research Scholar	Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya Wardha Maharashtra
Shubham Agrawal	Research Scholar	Banaras Hindu University
Angad Kumar Singh	Research Scholar	Mahatma Gandhi Central university
Arvind Rajpurohit	Research Scholar	SoA, IGNOU,Jaipur .
Vikas Singh Chauhan	Research Scholar	Hindu College Moradabad (U.P.)
Shalu Sonkar	Research Scholar	UPRTOU
Rohini Malviya	Research Scholar	Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi
Mahendra Vishwakarma	Research Scholar	MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA
Sushrut Yadav	Research Scholar	Banaras Hindu University
Chauhan Dasharathbhai Amrutbhai	Research Scholar	Gujarat Vidyapith, Ahmedabad
Manisha Choudhary	Research Scholar	Banaras Hindu University, Varanasi
Rahul Balmiki	Research Scholar	Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow
Bhaskar Kumar	Research Scholar	Banaras Hindu University Varanasi
Daya Shanker Singh Yadav	Professor	Sakaldiha P.G .College Sakaldiha Chandauli
Dhananjay Mishra	Research Scholar	Banaras Hindu University Varanasi

संलग्नक 2: आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक
शिक्षा केन्द्र, बी.एच.यू., वाराणसी

डॉ. हर्षद पटेल
कुलपति, गूजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद, गुजरात

संरक्षक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, अकादमिक एवं शोध,
आई.यू.सी.टी.ई.-बी.एच.यू.
वाराणसी

प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा
विभागाध्यक्ष, गांधी अध्ययन विभाग और
समन्वयक आई.क्यू.ए.सी.
गूजरात विद्यापीठ, गुजरात

संयोजक

डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक आचार्य, आई.यू.सी.टी.ई., वाराणसी

सह-संयोजक

डॉ. राज सिंह

सहायक आचार्य, आई.यू.सी.टी.ई., वाराणसी

सदस्य सचिव

डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह

सहायक आचार्य, आई.यू.सी.टी.ई., वाराणसी

संलग्नक 3: समाचार पत्रों की झलकियाँ

Devvrat: Goal of complete prosperity can be achieved only through Antyodaya

PIONEER NEWS SERVICE ■ VARANASI

A national seminar on 'Peace and Sustainable Development in the Light of Educational Ideas of Mahatma Gandhi' was organised on Wednesday on the occasion of birth anniversary of 'Father of the Nation' Mahatma Gandhi and former Prime Minister Lal Bahadur Shastri under the joint aegis of Inter-University Centre for Teacher Education (IUCTE), BHU (Varanasi) and Gujarat Vidyapeeth (Ahmedabad) .

The seminar began with the address of Gujarat Governor Acharya Devvrat through virtual medium. In his address, he said that the goal of complete prosperity can be achieved only through Antyodaya. "It was not just his imagination, but Mahatma Gandhi had sent groups from village to village to give his thought a practical form", he said, adding that Mahatma Gandhi dreamt of world welfare along with self-reliant India as he was of the view that without the development of the village, the prosperity of the country cannot happen. "That is why emphasis was laid on the education of cottage industry and crafts by Mahatma Gandhi.

Acharya Devvrat further said that in Gandhi's thinking, there is also the ideology of natural farming and naturopathy, due to which today the Panchabhuta (five elements) can be saved from getting polluted. He said we have angered these five gods due to which the world is facing trouble.

Dean (Academic and Research) of IUCTE Ashish Srivastava, said Gandhi's thoughts included every aspect of environment, earth crisis etc, after which it is

Ex-MGKV V-C Dr P Nag receiving a memento from IUCTE Director Prof PN Singh at a seminar in Varanasi

being discussed in Stockholm and Rio conferences. He said Gandhi also wrote a lot on the crisis of earth and air in Hindi Swaraj in 1906.

Former Vice-Chancellor (V-C) of Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth Prof Prithvis Nag, who was presiding over the inaugural session, said Gandhi's freedom movement for India included all aspects — cultural, industrial, spiritual and philosophical. He described the activities of Gandhi's freedom movement from 1942 to 1947.

The keynote speaker, Prof Sudhir Kumar Singh from Dayal Singh College, Delhi University, started his speech with Gandhi's inclusive thinking. IUCTE Director Prof Prem Narayan Singh, who was presiding over the inaugural session, said that till a few decades ago, the principles of Gandhi's basic education were present in every aspect of our education system. "Today, they need to be re-incorporated. Only then can we make the education system useful for the public", he said.

In the closing session, the keynote speaker was former professor of DAV Degree College Prof Dina Nath Singh,who said that today, in the national interest, there is a need to adopt the eleven elements of Gandhi.

संलग्नक 4: कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश
संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in